



डाकपत्थर। परम संत श्रीचंद्र स्वामी जी उदासीन को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता बहन।



सिरसा। चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार मनोज सिवाच को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.बिन्दू बहन।



देवबंद, गुज्जरवाड़ा। जन्माष्टमी की झांकी का उद्घाटन करने के पश्चात् सी.ओ. सुरेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुधा बहन।



फिरोजपुर। मुख्यमंत्री के राजनैतिक सलाहकार कमल शर्मा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.तृप्ता बहन।



गाजीपुर। 'अमृत-महोत्सव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक विजय मिश्रा, क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु.सुरेन्द्र, ब्र.कु.विमला बहन तथा अन्य।



गोहाना। 'रक्षाबंधन' का आध्यात्मिक संदेश देते हुए ब्र.कु.संगीता बहन तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए व्यवसायी गण।

शांति के लिए मेरी प्रतिज्ञा

त्रैमासिक सेवा कार्य योजना का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, भारत के कोलाबेरेशन (UNIC) के द्वारा 21 सितम्बर अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के दिन 'शांति के लिए मेरी प्रतिज्ञा' सेवा कार्य योजना का लॉन्चिंग न्यू दिल्ली के 'सिरोफोट ऑडिटोरियम' और मुम्बई के 'भाई दास हॉल' में 21 सितम्बर 2012 को होगा। और यह योजना 21 दिसम्बर 2012 तक चलेगी। इस योजना में सर्व स्वीच्छक संगठन, स्कूल, कॉलेज, क्लब, सोसायटी, बैंक तथा सरकारी कार्यालयों में 'शांति के लिए मेरी प्रतिज्ञा' का फार्म भरवाया



जायेगा। उसमें सभी को 10 मिनट शांति तथा उसके साथ की कमेंट्री भी जायेगी। जिससे कि व्यक्ति स्वयं में कर सके और दान दे सके।

राजयोग मेडिटेशन उपलब्ध करवाई भाग लेने वाला हर शांति का अनुभव विश्व को शांति का ब्रह्माकुमारी संस्थान के हर सेवाकेंद्र द्वारा यह कार्यक्रम शहर, कस्बा, गांव में आयोजित किया जायेगा। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- फोन नं. - 011-26490450 ईमेल:- shanti@bkivv.org

युवाओं ने अपनाया.....

पृष्ठ 1 का शेष अब समय आ गया है कि सभी विश्वविद्यालय में मूल्य आधारित शिक्षा संचालित की जाये जिससे युवाओं में नये संस्कार आयेंगे। यदि सभी विश्वविद्यालयों में इस तरह के कोर्स संचालित हो जाते हैं तो निश्चित रूप से समाज में एक बदलाव आयेगा। जो आने वाले युग का निर्माण करेगा।

संस्था के महासचिव एवं शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.निर्वेन ने कहा कि शिक्षा प्रभाग का यह प्रयास लगातार जारी रहेगा जिससे अधिक से अधिक संख्या में युवा इस पाठ्यक्रम से जुड़े और अपने जीवन में मूल्यों को धारण कर विश्व के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने कहा कि यह शिक्षा युवाओं को मूल्यनिष्ठ व कर्तव्यनिष्ठ बनायेगी।

इस अवसर पर अन्नामलाई विश्वविद्यालय तमिलनाडू के दूरस्थ शिक्षा के निदेशक डॉ.एच.विश्वनाथ, प्रोग्राम डायरेक्टर पांडयामणि, डॉ.आर.पी.गुप्ता सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

साबरमती जेल में

पृष्ठ 12 का शेष डॉ.आर.पी.गुप्ता ने उतीर्ण विद्यार्थियों की सराहना करते हुए उन्हें जीवन में मूल्यों और नैतिकता को अपनाने का शपथ दिलाया।

गुजरात जोन की संचालिका ब्र.कु.सरला ने कहा कि आज का यह दिन भारत वर्ष के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। कारागृह के वातावरण में जहां तन का बंधन होते हुए अपने मन को सकारात्मकता की दिशा में ले जाकर पढ़ाई करने का अवसर परमात्मा ने दिया है। सचमुच आज यह साबरमती जेल साबरमती आश्रम के रूप में बदल गया है।

इस कार्यक्रम को अनेक अधिकारियों ने सम्बोधित अपने-अपने विचार रखें तथा इस कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ।

परम शक्ति ही मनुष्य का....

पृष्ठ 2 का शेष ज्योति प्राप्त करने की इच्छा पर पूर्ण विराम लगा दिया और परमात्मा की प्राप्ति की उपासना करने लग गया।

“संसार कौन” जो संसार में रहे वे ही? “चलते-चलते” में विमल मित्र यह बात का इकार करता है। उसके मन में जो मनुष्य संसार में रचा-बसा है वे सच में संसारी नहीं हैं। परंतु जो “संसार” से बहार निकल जाता है वह संसारी है। क्योंकि जो संसार में नहीं रहता, संसार उनका हो जाता है। ऐसा मनुष्य ही सच में कह सकता है कि “सह संसार मेरा है।” संत आंगस्टाइन को यह बात वास्तव में सत्य है कि विश्व एक अति विशाल ग्रंथ है। जो उसके बाहर निकल नहीं सकते, वे उसका एकमात्र पृष्ठ ही पढ़ सकते हैं! दुनिया उनके आशिक के मोहब्बत का स्वाद भी चखता है! और स्वाद चखाने की सजा की अनुभूति भी करा सकते हैं! मनुष्य बद्ध-धारी चाल चलता है। उसे संसार में भी डूबना है और मिल जाये तो भगवान को भी प्राप्त कर लेना है। इसलिए ‘कल्याण कूज’ में बताया गई बात को स्मरण में रखना चाहिए कि भगवान के लिए जगत छोड़ना पड़ें तो उसमें क्या हर्ज है। लेकिन जगत के लिए भगवान को तो नहीं छोड़ना चाहिए! हरेक मनुष्य के पास दो जगत हैं, एक अंदर का और दूसरा बाहर का! अंदर के जगत में तो क्या पता कितना-कितना जगत रचकर मनुष्य जीता होगा! मानव के अंदर के जगत का चित्रशाला भी है, प्रयोगशाला भी है और प्राप्त किया हुआ खो-देने की वियोगशाला भी है।

मन अशांत होने का कारण- जजमेंटल होना

आपने आधा घंटा पिक्चर देखी कितनी देर रोये उस दृश्य को देखकर, यहां तक कि आपको अपना रूमाल तक निकालना पड़ गया और मूवी देखने के बाद हम कहते हैं कि हमने अच्छा महसूस किया। आपने क्या अच्छा महसूस किया! कहीं इमोशन अच्छी थी, क्या यह मेरी आवश्यकता थी! जैसे ड्रग्स है जो कि शरीर के लिए नुकसानदायक है लेकिन शरीर को आदत पड़ गयी है उसे लेने की। जब तक शरीर को वो चीज मिलती नहीं है तब तक आराम अनुभव नहीं होता है। इसी तरह अगर मुझे कोई विशेष प्रोग्राम से प्रोत्साहन मिलता है तो फिर मैं धीरे-धीरे इससे आगे की ओर देखती हूँ कि ये तो मुझे देखा ही है।

अगर आज मैं पहुंच नहीं पायी समय पर या लाइट नहीं थी घर पर, वो प्रोग्राम नहीं आ रहा है, तो मैं अच्छा महसूस नहीं करती हूँ। यह जैसे कि जो चाहिए था उसे वो नहीं मिला, क्योंकि उसे उसकी आदत होती है। जैसे कि आपने वो गीत के साथ किया। अगले समय हम सभी इसको प्रयोग करके देख सकते हैं। पहले जब हम बैठते हैं कुछ देखने के लिए तो हमारा माइंड तुरंत ही स्टिल हो जाता है। पहले तो आपके मन पर दूसरे थॉट्स का प्रभाव पड़ता है। जब आप अपने माइंड को चेक करना शुरू करेंगे तो फिर यह आपको बहुत ही रुचकर एवं अच्छा लगेगा।

अब जैसे ही आप आकर बैठें टी.वी. के सामने, पहले थोड़ी देर हमारे मन में कुछ और चल रहा था जिसे मैं ऑफिस के कार्य करके, छोड़कर आया हूँ। धीरे-धीरे वो थॉट्स खत्म हो जाती है। इसे आप अनुभव कर सकते हैं कि जब आपके मन में ज्यादा थॉट नहीं होते हैं यह मन जल्द ही धीरे-धीरे शांत हो जाता है। क्योंकि वो वाली बातें जो घर लेकर आया था, अब वो बातें खत्म हो गयी। तो ये माइंड थोड़ा-थोड़ा स्टिल हो जाता है। ये जो स्थिरता की स्टेज है, जैसे कि आप यहां हैं और प्रोग्राम कहीं और चल रहा है। आप प्रोग्राम को डिटैच ऑब्जर्वर की



तरह देख रहे हैं। अब उसका प्रभाव आपके ऊपर नहीं पड़ेगा, लेकिन यह स्थिति बहुत थोड़े समय के लिए होती है। धीरे-धीरे हमारी जो अगली अवस्था आती है उस अवस्था में हम जजमेंटल होना शुरू हो जाते हैं कि ये ऐसे क्यों बोल रहे हैं? ऐसे क्यों कर रहे हैं? ऐसे नहीं करना चाहिए माना कुछ भी.....।

प्रश्न:- तब हम कहते हैं कि अब उसने ऐसे किया तो अब ऐसे ही होना चाहिए!

उत्तर:- जैसे कि यह क्रिकेट मैच हो। दूसरे ही क्षण हम जजमेंटल हो जाते हैं और लोगों से विचार चाहते हैं कि हम ऐसे करते तो ऐसा नहीं होता। जैसे ही हम जजमेंटल होना शुरू होते हैं तो मतलब कि क्यों, क्या, कैसे की क्वेश्चन मार्क की सीरिज में गये। ये जो मन की स्थिरता थी, वो खत्म हो जाती है और हमारा मन फिर से डिस्टर्ब होना शुरू हो जाता है। यह हमारी दूसरी स्टेज है। -तीसरी अवस्था जो आती है वह यह है कि हम उस कैरेक्टर की स्टोरी के अंदर ही पूरी तरह से इन्वॉल्व हो जाते हैं। और यह अवस्था ऐसी होती है कि वो कैरेक्टर जो इमोशन वहां अनुभव कर रहा होता है, वही इमोशन हम यहां अनुभव करना शुरू कर देते हैं। माना कि हम पूरी तरह से उसमें इन्वॉल्व हो जाते हैं। फिर उस समय हमारे मन में कोई दूसरी थॉट होती ही नहीं है, क्योंकि हमारे मन की जो क्रियाशीलता है वो खत्म हो जाती है। फिर मैं वही सोचती हूँ जो उस कहानी में क्रियेट हो रहा होता है।

प्रश्न:- मैं जजमेंटल होने से पहले थॉट तो क्रियेट कर रही थी!

उत्तर:- जैसे ही जजमेंटल हुए तब क्या हुआ, क्रियेटिविटी नहीं थी। जैसे ही आप जजमेंटल होते हैं तो आपकी सोचने समझने की क्षमता खत्म हो जाती है, क्योंकि आप उसे कंट्रोल करने की कोशिश करने लगते हैं जो कि आपके कंट्रोल में है ही नहीं। मैं कोई प्रोग्राम देख रही हूँ और मैं कहूँ कि इसे ये नहीं ये पहनना चाहिए था, ये सेट ऐसा नहीं ऐसा होना चाहिए था। आप थोड़ा इस पर विचार करें कि आपके सोचने से क्या ये चीजें बदल जायेगी? नहीं। हम उस चीज के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं जो कि मेरे नियंत्रण में ही नहीं है। (क्रमशः)